



Jahannam Kya Hai ? (Hindi)

हफ्तावार रिसाला : 351

Weekly Booklet : 351

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की किताब "नेकी की दावत" की एक किस्त बनाम

जहन्नम क्या है ?

सफ़हात 25

दुनिया की महबूबत तमाम गुनाहों की जड़ है 02 घर वालों को अज़ाब से किस तरह बचाएं ? 07

जहन्नम की लरज़ा खेज़ कहानी जिब्रईल की ज़बानी 09 पेन्सिल की चोरी से फांसी के फन्दे तक 19

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ
الْعَالِيَةِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
ط اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
ان شاء الله تعالى जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاذْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (مُسْتَنْزَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
व बक्तीअ
व मरिफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : जहन्नम क्या है ?

सिने त्बाअत : शव्वालुल मुकर्रम 1445 हि., मई 2024 ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : मक्तबतुल मदीना

मदनी इलितजा : किसी और को यह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला “जहन्नम क्या है ?”

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए Whatsapp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتِمِ النَّبِيِّينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

येह मज़्मून “नेकी की दा’वत” के सफ़हा 566 ता 584 से लिया गया है ।

जहन्नम क्या है ?

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 23 सफ़हात का रिसाला :
“जहन्नम क्या है ?” पढ़ या सुन ले उसे जहन्नम के अज़ाब से बचा और
उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदोस में बे हिसाब दाख़िला अता
फ़रमा ।

أَمِينَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : कियामत के रोज़ अल्लाह
पाक के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स अल्लाह पाक के अर्श
के साए में होंगे । अर्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** वोह कौन लोग
होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे
(2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़
पढ़ने वाला ।

(الهدور السافرة، ص 131، حديث: 366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

क्या फैशन परस्त ही मुअज़ज़ज़ है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है ! क्या आज दुन्या को
“बहुत बड़ी चीज़” नहीं समझा जा रहा ? क्या आज कल के मुसलमानों
की भारी अक्सरियत के दिलों से इस्लाम की हक़ीक़ी हैबत निकलती नहीं
जा रही ? क्या नेकी की दा’वत देना और बुराई से मन्अ करना तर्क नहीं

कर दिया गया ? क्या आपस में गाली गलोच का सिल्लिसला जोरों पर नहीं ? सद करोड़ अफ़सोस ! आज भारी अक्सरियत की जिन्दगी का अन्दाज़ येही बता रहा है कि दुन्या को आख़िरत पर तरजीह दी जा रही है, शरीअत व सुन्नत से **مَعَادُ اللَّهِ** लोग दूर होते चले जा रहे हैं, सुन्नतों से येह दूरी और फ़िरंगी फ़ैशन का जुनून आख़िर इस मुआशरे को कहां ले जाएगा !

दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! होश में आइये और मरने से पहले संभल जाइये ! यकीन मानिये ! येह सारी तबाही दुन्या की महब्बत ही ने मचाई है, हुब्बे दुन्या के सबब आज लोग सुन्नतों से दूर जा पड़े हैं, सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** फ़रमाते हैं : **حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيئَةٍ** या'नी दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है । (9) **موسوعة امام ابن ابى الدنيا، 22/5، حديث: 9**) सद करोड़ अफ़सोस ! जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों के हुसूल के लिये मा'मूली सी घरेलू आसाइशें छोड़ कर फ़क़त चन्द दिन के लिये भी सुन्नतें सीखने सिखाने की खातिर राहे खुदा में सफ़र के लिये आज हम तय्यार नहीं होते जब कि फ़ानी दुन्या की अरिज़ी दौलत कमाने के लिये अपने घर वालों से बरसहा बरस के लिये हज़ारों मील दूर जाने के लिये फ़ौरन तय्यार हो जाते हैं । क्या मुसल्मानों की दीनी ए'तिबार से बरबादी और ग़ैरों का इन पर हावी होना, मस्जिदों की वीरानी, सिनेमा घरों और ऐशो नशात के अड्डों की आबादी, फ़िरंगी तहज़ीब की यलगार, मग़रिबी फ़ैशन की भरमार, फ़िल्में ड्रामे देखने कि लिये घर घर टी वी, केबल सिस्टम, इन्टरनेट और वी सी आर, हर तरफ़ गुनाहों का गर्म बाज़ार और मुसल्मानों की भारी अक्सरियत का बिगड़ा हुवा किरदार, येह सब कुछ हमें पुकार

पुकार कर दा'वते फ़िक्र नहीं दे रहा कि "हमें अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों का ज़रूर बिज़्ज़रूर मुसाफ़िर बनना चाहिये।" आज हमें जिन्दगी में एक मुश्त 12 माह हर 12 माह में एक माह और उम्र भर हर माह 3 दिन के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना बेहद मुश्किल महसूस होता है। सोचिये तो सही ! अगर हम में से हर एक अपनी मजबूरियों में फंस कर रह गया तो आख़िर कौन इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेगा ? कौन सारी दुनिया के लोगों तक नेकी की दा'वत पहुंचाएगा ? ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी प्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही कौन करेगा ? कौन अग़्यार की वज़्अ क़त्अ पर इतराने वाले नादान मुसल्मानों को सुन्नतों के सांचे में ढलने का ज़ेहन देगा ? कौन इन्हें येह मदनी मक़सद अपनाने की तरगीब देगा कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَاءَ اللهُ । ऐ काश ! हर इस्लामी भाई येह निय्यत कर ले कि जिन्दगी में एक मुश्त 12 माह और हर 12 माह में एक माह और उम्र भर हर माह 3 दिन के लिये आशिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार करूंगा, اِنْ شَاءَ اللهُ । मदनी क़ाफ़िले की बरकतों को समझने के लिये एक मदनी बहार मुलाहज़ा हो, चुनान्चे

बद तरीन, अज़ीज़ तरीन कैसे बना ?

एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : वोह बेहद बिगड़े हुवे इन्सान थे, फ़िल्मों ड्रामों का रसिया होने के साथ साथ औबाश लड़कों से दोस्तियां और रात गए तक उन के साथ आवारा गर्दियां करना उन के

मा'मूलात में शामिल था। उन बुरी हरकतों की वजह से न सिर्फ़ ख़ानदान भर के लोग बल्कि उन के अपने वालिदैन भी उन से कतराते, घर में उन की आमद से घबराते और यहां तक कि दूसरों को भी उन की सोहबत की नुहूसत से बचने की तल्कीन फ़रमाते। मुआमला इस हद तक बढ़ चुका था कि वालिद साहिब उन्हें घर से निकाल देने पर तय्यार हो चुके थे। उन की गुनाहों भरी ख़जां रसीदा शाम के सुब्हे बहारां बनने की सबील कुछ इस तरह हुई कि एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी ने निहायत ही शफ़क़त के साथ इन्फ़रादी कोशिश करते हुए उन्हें दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले दो दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की। उन्होंने ने मुआमला वालिद साहिब की इजाज़त पर छोड़ दिया। नेकी की दा'वत के जज़्बे से सरशार अशिक़े रसूल इस्लामी भाई उन के इस फ़ैसले को सुन कर खुशी से झूम उठे क्यूं कि वालिद साहिब पहले ही दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से बहुत महबबत करते थे। मौक़अ पाते ही उन मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी ने वालिद साहिब पर इन्फ़रादी कोशिश करते हुए उन के इज्तिमाअ में शिर्कत की इजाज़त चाही। वालिद साहिब ने उन की इस्लाह का ज़रीआ समझते हुए मअ अख़्राजात इज्तिमाअ में जाने की ब खुशी इजाज़त बख़्श दी। मुक़र्ररा तारीख़ पर अशिक़ाने रसूल की मइय्यत में इज्तिमाअ में शिर्कत की सअ़ादत नसीब हुई। इज्तिमाअ में होने वाले सुन्नतों भरे बयानात, जि़क्रुल्लाह और रिक्क़त अंगेज़ दुआ ने उन के दिल में हलचल मचा कर रख दी। मदनी काफ़िले में सफ़र की दा'वत मिलने पर वोह हाथों हाथ अशिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के मदनी काफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। **الْحَمْدُ لِلَّهِ** मदनी काफ़िले में अशिक़ाने रसूल की

सोहबतों और शफ़क़तों ने उन के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। गुनाहों से तौबा का तोहफ़ा और सुन्नतों भरे मदनी लिबास का ज़ब्जा मिला, वालिदैन की हक़ तलफ़ियों की मुआफ़ी मांगने का ज़ेहन बना, चेहरे पर सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ या'नी दाढ़ी शरीफ़ और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाने की निय्यत बनी। मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर घर में दाख़िल होते ही वालिद साहिब के क़दमों में गिर गए और उन से रो रो कर मुआफ़ी त़लब की। इस तरह वोह सुन्नतों के मदनी फूल लुटाने में मशगूल हुए। कल तक जो अज़ीज़ो अक़ारिब उन्हें देख कर कतराते थे اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ अब वोह गले लगाते हैं। कल तक वोह ख़ानदान के अन्दर “बद तरीन” थे اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल की बरकत से आज उन के नज़्दीक “अज़ीज़ तरीन” बन गए हैं।

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

घर वालों को नेकी की दा'वत की ताकीद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आशिके रसूल की इन्फ़रादी कोशिश रंग लाई और मुआशरे का एक नासूर नुमा “बद तरीन” इन्सान सब की आंखों का तारा और “अज़ीज़ तरीन” मुसल्मान बन गया। हम सभी अगर हर मिलने जुलने वाले को नमाज़ की तल्कीन करते, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत देते और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की रूबत दिलाते रहें तो देखते ही देखते मुआशरे में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाए ! बिल खुसूस अपने घर वालों को भी नेकी की दा'वत देनी और उन्हें गुनाहों से बचाना चाहिये। चुनान्चे हज़रते ज़ैद बिन अस्लम رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत

है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : (پ 28، التحريم: 6) : ﴿قُوَا انْفُسَكُمْ وَاهْلِيَكُمْ نَارًا﴾ तरजमए कन्जुल ईमान : अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ । सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हम अपने घर वालों को किस तरह आग से बचाएं ? हुज़ूरे पुरनूर, صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : उन को उन कामों के करने का हुकम दो जो **अल्लाह** पाक को महबूब (या'नी प्यारे) हैं और उन कामों से मन्अ करो जो **अल्लाह** पाक को ना पसन्द हैं ।

(تفسير درمنثور، 8/225)

खौफ़े ख़ुदा का ईमान अफ़ोज़ वाक़िआ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हदीसे पाक में हमारे प्यारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पारह 28 सूरतुत्तहरीम की आयत नम्बर 6 का जो हिस्सा तिलावत फ़रमाया है उस की तफ़सीर से क़ब्ल एक ईमान अफ़ोज़ हिक्कयत समाअत फ़रमाइये चुनान्वे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1012 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल” जिल्द 2 सफ़हा 881 पर है : हज़रते इब्ने अ़ब्बास ف़रमाते हैं कि जब **अल्लाह** पाक ने मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوَا انْفُسَكُمْ وَاهْلِيَكُمْ نَارًا وَأَوْدُهَا النَّاسِ وَالْحِجَارَةَ﴾ (پ 28، التحريم: 6) तरजमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं । तो शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे अपने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने तिलावत फ़रमाया तो एक नौ जवान ग़श खा कर गिर गया । आप

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस के दिल पर अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह हरकत कर रहा था । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “ऐ नौ जवान ! كَهْوَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” उस ने कहा तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे जन्नत की बिशारत (या’नी खुश ख़बरी) दी, सहाबए किराम الرِّضْوَانُ ने अर्ज़ की : **يا رسوللّٰه صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !** क्या हमारे दरमियान में से ? (या’नी हम में से किसी और की येह हालत हो जाए तो ?) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने अल्लाह पाक का येह फ़रमान नहीं सुना : ﴿ذٰلِكَ لِسُنِّ خَاكٍ مَّقَامِي وَخَاكٍ وَعَيْدِي﴾ (پ 13، ابراهيم: 14) : **ترجمه كَنْزُ الْجَمَانِ** : येह उस के लिये है जो मेरे हुजूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे । (متدرک، 93/3، حدیث: 3390-الروا، 2، 471/2)

अज़ाब से किस तरह बचाएं ?

हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا﴾ के तहत फ़रमाते हैं : “अल्लाह पाक और उस के **رسول** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअत कर के और उन्हें इल्मो अदब सिखा कर ।” (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ)

अहले ख़ाना को नेकी की बातें बताओ

हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान कर्दा आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : खुद भी भलाई की बातें सीखो और अपने अहले ख़ाना को भी नेकी की बातें और अदब सिखाओ ।

(جمع الجوامع للسيوطي، 13/244، حدیث: 6776)

बालिग़ औलाद की इस्लाह के मुतअल्लिक़ आ'ला हज़रत का फ़तवा

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़हा 370 से एक मा'लूमाती फ़तवा आसान कर के पेश करने की सई की है : मुलाहज़ा फ़रमाइये : सुवाल : बालिग़ औलाद को नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ करना वालिदैन पर फ़र्ज़ है या वाजिब ? अल जवाब : जिस फ़े'ल (काम) की जो शर्ई हैसियत है वालिदैन के लिये इस्लाह के तअल्लुक़ से शरअन वैसा ही हुक्म है या'नी फ़र्ज़ पर फ़र्ज़, वाजिब पर वाजिब, सुन्नत पर सुन्नत, मुस्तहब पर मुस्तहब मगर ब शर्ते कुदरत ब क़दरे कुदरत ब उम्मीदे मन्फ़अत (या'नी जितनी कुदरत हो उसी के मुताबिक़ इस्लाह की बात कहें जब कि नफ़अ की उम्मीद हो) वरना (हुक्मे कुरआनी वाजेह है कि) :

(7, المائدة: 105) ﴿عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ لَا يَصْرُكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो ।

(फ़तावा रज़विय्या, 24/370)

जहन्नम का तआरुफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी और घर वालों की इस्लाह पर खुसूसी तवज्जोह देते हुए खुद को और उन को जहन्नम की अंधेरी और ख़ौफ़नाक काली आग से बचाने की पैहम कोशिश जारी रखनी चाहिये । खुदा की क़सम ! जहन्नम की आग बेहद शदीद है, इसे किसी सूरत से भी कोई बरदाश्त नहीं कर सकेगा । फ़र्ज़ नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज़ में कोताही करने वालों, मां बाप को सताने वालों, अपनी औलाद की शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ तरबियत न करने वालों, अपने बेटों को

दाढ़ी रखने से रोकने वालों और खुद भी दाढ़ी मुंडाने वालों, दाढ़ी को एक मुठ्ठी से घटाने वालों, मिलावट वाला माल धोके से गाहक को पकड़ाने वालों, डन्डी मार कर सौदा चलाने वालों, चोरों, डाकूओं, जेब कतरों, टीवी, (T.V.), और इन्टरनेट (INTERNET) पर फ़िल्में ड्रामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, अपने घर वालों को इस की सहूलत फ़राहम करने वालों, अपने घरों पर फ़िल्में देखने के लिये डिश एन्टिना (DISH ANTENNA) लगाने वालों, लोगों को फ़िल्मों की लीड (LEAD) या केबल (CABLE) देने वालों ! और तरह तरह से गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है । यकीन मानिये ! जहन्नम के अंधेरे में डूबी हुई काली काली आग सही नहीं जा सकेगी, तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : दोज़ख़ की आग हज़ार साल जलाई गई यहां तक कि सुख़ हो गई, फिर हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल दहकाई गई यहां तक कि सियाह (या'नी काली) हो गई पस (अब) वोह निहायत ही सियाह है । (ترمذی، 4/266، حدیث: 2600)

जहन्नम की लरज़ा खेज़ कहानी जिब्रईल की ज़बानी

खुदा की क़सम ! जहन्नम का अज़ाब किसी से भी न सहा जाएगा । हज़रते इमाम हाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलैमान त़बरानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ नक्ल करते हैं : एक बार मदीने के ताजदार, صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबारे दुरबार में हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िर हुए और अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नबिय्ये बरहक़ बना कर भेजा है, अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर

खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गर्मी से हलाक हो जाएं, अगर अहले जहन्नम का एक कपड़ा ज़मीन व आस्मान के दरमियान लटका दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन मौत के घाट उतर जाएं। आका
 صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हक़ के साथ मब्रूक़स फ़रमाया अगर जहन्नम पर मुक़रर फ़िरिशतों में से एक फ़िरिशता दुन्या वालों के सामने ज़ाहिर हो जाए तो उस की हैबत से तमाम अहले ज़मीन मर जाएं। सरकार ! صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस ज़ाते वाला की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को रसूले बरहक़ बना कर भेजा है जहन्नम की ज़न्जीरों का एक हलक़ा जिस का ज़िक्र कुरआने करीम में फ़रमाया गया है अगर उसे दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और तहूतस्सरा (या'नी सातवीं ज़मीन के नीचे) जा पहुंचें। सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! बस करो इतना ही तज़िकरा काफ़ी है, कहीं ऐसा न हो कि मेरा दिल फट जाए और मैं वफ़ात पा जाऊं। प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) को मुलाहज़ा फ़रमाया कि रो रहे हैं, फ़रमाया : ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! तुम क्यूं रो रहे हो ? बारगाहे खुदा वन्दी में आप को तो एक ख़ास मक़ाम हासिल है। अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं क्यूं न रोऊं, कहीं ऐसा न हो कि इल्मे इलाही में मौजूदा हाल के बजाए मेरा कोई और हाल हो, कहीं इब्लीस की तरह मुझे भी इम्तिहान में न डाल दिया जाए। कहीं हारूत व मारूत की तरह मुझे भी आज़्माइश में मुब्तला न कर दिया जाए।

रावी बताते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी रोने लगे, हज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) भी रो रहे थे। दोनों हज़रात रोते रहे, आख़िरे कार

आवाज़ आई : “ऐ जिब्रईल ! (عَلَيْهِ السَّلَام) ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) अल्लाह पाक ने आप दोनों को अपनी ना फ़रमानी से महफूज़ कर लिया है ।” जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) आस्मानों की तरफ़ परवाज़ कर गए । मदीने के ताजवर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) बाहर तशरीफ़ लाए । बा’ज़ अन्सार सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के करीब से गुज़रे जो हंस और खेल रहे थे । फ़रमाया : “तुम हंस रहे हो और तुम्हारे पीछे जहन्नम है, अगर तुम वोह बातें जानते जो मैं जानता हूँ तो तुम थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते और तुम खाना पीना छोड़ देते और पहाड़ों की तरफ़ निकल जाते और ख़ूब मशक्कतें बरदाश्त कर के इबादते इलाही बजा लाते ।” आवाज़ आई : ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मेरे बन्दों को मायूस मत कीजिये, मैं ने आप को खुश ख़बरी देने वाला बना कर भेजा है और तंगी करने वाला बना कर नहीं भेजा । पस रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया : राहे रास्त पर गामज़न रहो (या’नी सीधे रास्ते पर चलो) और मियाना रवी इख़्तियार करो । (مجموعه اوسط، 2/78، حديث: 2583)

अफ़सोस ! हमारा दिल नहीं लरज़ता !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये हमारे मीठे मीठे आका (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मा’सूम बल्कि सय्यिदुल मा’सूमीन हो कर भी और जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) भी मा’सूम और मा’सूम फ़िरिशतों के आका होने के बा वुजूद अज़ाबे जहन्नम का तज़्किरा छिड़ने पर ख़ौफ़े रब्बे बारी से गिर्या व ज़ारी फ़रमाएं । और एक हम हैं कि गुनाह पर गुनाह किये जाएं मगर जहन्नम का हौलनाक तज़्किरा सुन कर न दिल लरज़े और न हमारा कलेजा कांपे और न ही पलकें भीगें । अफ़सोस ! अज़ाबे जहन्नम की ख़ौफ़नाक

बातें सुन कर भी न हमें पशेमानी है न परेशानी, खजालत है न नदामत ।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 238)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

रात की तन्हाई में आयात सुन कर वफ़ात

हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ की हालत येह होती कि जहन्नम का तज़्किरा सुन कर या जहन्नम के अज़ाबात के बयान पर मुश्तमिल कुरआनी आयात सुन कर बेहोश हो जाते बल्कि बा'जों की तो रूहें परवाज़ कर जातीं चुनान्चे हज़रते मन्सूर बिन इमामा رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं सफ़रे हूज के दौरान कूफ़े की एक गली में ठहरा हुवा था । अंधेरी रात में किसी ज़रूरत से निकला, एक घर से रिक्कत अंगेज़ मुनाजात की कुछ इस तरह आवाज़ सुनी : ऐ मेरे परवर दगार तेरी इज़ज़त और तेरे जलाल की क़सम ! मैं ने अपनी मा'सिय्यत में तेरी मुख़ालफ़त का इरादा नहीं किया था, हां इतना ज़रूर है कि गुनाह करते वक़्त तुझ से ना वाकिफ़ भी न था, बस मुझ से गुनाह सरज़द हो गया और मुझ पर तेरी ढील देने वाली पर्दापोशी ने मुझे गुनाह पर दिलेर कर दिया और मेरी बद बख़्ती ने गुनाह पर मेरी मदद की और मैं अपनी नादानी के सबब ना फ़रमानी में मुब्तला हो गया । अब मैं तेरे फ़ज़ल से उम्मीद रखता हूं कि तू मेरा उज़्र क़बूल फ़रमाएगा । अब अगर तूने मेरी मा'ज़िरत क़बूल न की और मुझ पर रहूम न फ़रमाया तो हाए अज़ाब में मेरे ग़म की दराज़ी ! जब वोह ख़ामोश हुवा तो मैं ने पारह 28 सूरतुत्तहरीम की छटी आयते करीमा पढ़ी :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ
نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا
أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ①

तरजमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं । उस पर सख्त करे फ़िरश्ते मुकरर हैं, जो अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं ।

आयते मुबारका पढ़ने के बा'द मैं ने एक शदीद चीखने और धड़ाम से गिरने की आवाज़ सुनी और उस के बा'द ख़ामोशी तारी हो गई और किसी किसिम के हिल जुल की आवाज़ महसूस न हुई । फिर मैं अपना काम निमटा कर अपनी क़ियाम गाह पर वापस आ गया । जब मैं सुब्ह उस तरफ़ गया तो लोग ता'ज़ि़य्यत के लिये जम्अ थे और रोने की आवाज़ें आ रही थीं, दरी अस्ना एक जड़फ़ बुढ़िया देखी जो रो रो कर कह रही थी अल्लाह पाक मेरे बेटे के कातिल को जज़ाए ख़ैर न दे कि उस ने मेरे बेटे पर अज़ाबे इलाही के बयान पर मुशतमिल आयते करीमा तिलावत की, जिस की ताब न ला कर वोह ख़ौफ़े खुदा के सबब गिरा और फ़ौत हो गया । हज़रते मन्सूर बिन इमामा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ कहते हैं : उस रात मैं ने ख़्वाब में एक शख्स को देखा जो मुझ से कह रहा था : “मैं वोही हूँ जिस ने आप की ज़बानी सूरतुत्तहरीम की छटी आयते करीमा की तिलावत सुन कर ख़ौफ़े खुदा के सबब दम तोड़ा है ।” मैं ने पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟ अल्लाह पाक ने तेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया : अल्लाह पाक ने मेरे साथ वोह किया है जो शुहदाए बद्र के साथ किया । मैं ने पूछा येह कैसे ? उस

ने कहा : इस लिये कि अल्लाह पाक ने उन को काफ़िरों की तलवार से शहीद किया और मुझे अपने इश्क़ की तलवार से । (मواظظ حسنه، ص 42، 43: بتیغ)

खुदाया तेरे ख़ौफ़ का हूँ मैं साइल सदा दिल रहे तेरी उल्फ़त में घाइल
गुनाहों से हर आन डरता रहूँ मैं फ़क़त नेक ही काम करता रहूँ मैं
तू कर दर गुज़र मुझ को हर मा'सिय्यत से नवाज़ ऐ खुदाए करीम मग़िफ़रत से

أَمِينِ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

घर वालों को भी नेकी की दा'वत दीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ाइफ़ीन (या'नी अल्लाह पाक से डरने वालों) की भी क्या शान होती है ! जिस आयते करीमा को सुन कर ख़ौफ़े खुदा रखने वाले बन्दे ने दम तोड़ा था, उस में अपने साथ साथ अपने घर वालों को भी जहन्नम की आग से बचाने का हुक्म दिया गया है । हर एक को चाहिये कि खुद भी नेकियां करे, गुनाहों से बचे और अहले ख़ाना की भी इस्लाह का सामान करता रहे । हज़रते अल्लामा कुरतुबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने हज़रते इल्किया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का कौल नक्ल फ़रमाया : हम पर फ़र्ज़ है कि अपनी औलाद और अपने अहले ख़ाना को दीन की ता'लीम दें, अच्छी बातें सिखाएं और उस अदब व हुनर की ता'लीम दें जिस के बिगैर चारा नहीं । (तफ़ीर قرطبي، 9/148)

बच्चे को सब से पहले दीन सिखाइये

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : सब से मुक़द्दम येह है कि बच्चों को कुरआने मजीद पढ़ाएं और दीन की ज़रूरी बातें सिखाई जाएं, रोज़ा व नमाज़ व तह़ारत

और बैअ व इजारा (या'नी खरीद व फ़रोख़्त और उजरत वगैरा के लेन देन) व दीगर मुअमलात के मसाइल जिन की रोज़ मर्रा हाजत पड़ती है और ना वाकिफ़ी से ख़िलाफ़े शर्अ अमल करने के जुर्म में मुब्तला होते हैं उन की ता'लीम हो। अगर देखें कि बच्चे को इल्म की तरफ़ रुज़्हान (या'नी मैलान) है और समझदार है तो इल्मे दीन की ख़िदमत से बढ़ कर क्या काम है और अगर इस्तिताअत न हो तो तस्हीह व ता'लीमे अक़ाइद और ज़रूरी मसाइल की ता'लीम के बा'द जिस जाइज़ काम में लगाएं इख़्तियार है। (बहारे शरीअत, 2/256, हिस्सा : 8) लड़की को भी अक़ाइद व ज़रूरी मसाइल सिखाने के बा'द किसी औरत से सिलाई और नक़शो निगार वगैरा ऐसे काम सिखाएं जिन की औरतों को अक्सर ज़रूरत पड़ती है और खाना पकाने और दीगर उमूरे ख़ानादारी में उस को सलीके होने की कोशिश करें कि सलीके वाली औरत जिस ख़ूबी से ज़िन्दगी बसर कर सकती है बद सलीका नहीं कर सकती। (बहारे शरीअत, 2/257, हिस्सा : 8, 279/5, (رد المحتار))

औलाद को सखावत व एहसान की ता'लीम देना वाजिब है

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत जिल्द 3” सफ़हा 68 पर है : इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मोमिन पर अपनी औलाद को जूद (या'नी सखावत) व एहसान की ता'लीम वैसी ही वाजिब है जिस तरह तौहीद व ईमान की ता'लीम वाजिब है क्यूं कि जूद व एहसान से दुन्या की महब्बत दूर होती है और महब्बते दुन्या ही हर गुनाह की जड़ है। (568/8, (رد المحتار))

बे औलाद को जब औलाद मिली !

कहा जाता है : एक मालदार शख़्स के यहां औलाद न थी, उस ने

उस के लिये बड़े जतन किये मगर काम्याबी न मिली, किसी ने मश्वरा दिया कि मक्कए मुकर्रमा हाज़िर हों और मस्जिदुल हराम शरीफ़ के अन्दर मक़ामे इब्राहीम के पास दुआ मांगिये **اِنَّ شَاءَ اللهُ** आप का काम हो जाएगा । उस ने ऐसा ही किया और **अल्लाह** पाक ने उसे चांद सा बेटा दिया । उस ने बड़े चाव चोचले से उस की परवरिश की, इक्लौते बच्चे को ज़रूरत से ज़ियादा प्यार मिला और दुरुस्त तरबियत न की गई, जिस के सबब वोह आवारा और उड़ाऊ खर्च हो गया । बाप को बहुत देर में होश आया, उस ने अपने बिगड़े हुए बेटे को पैसे देने बन्द कर दिये, इस से वोह अपने बाप का मुख़ालिफ़ हो गया और जहां उस के बाप ने औलाद के लिये दुआ मांगी थी जिस का येह समर (या'नी नतीजा) था वहीं या'नी मक्कए मुकर्रमा हाज़िर हो कर मक़ामे इब्राहीम के पास येह ना लाइक़ बेटा अपने बाप के मरने की दुआएं मांगने लगा ताकि बाप की मौत की सूरत में इसे तर्के (या'नी विरसे) में उस की दौलत हाथ आ जाए ।

औलाद के तलब गारों की खिदमत में नेकी की दा'वत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो लोग बे औलादी का रोना रोते हैं ! उन के लिये इस वाकिअे में इब्रत ही इब्रत है, **अल्लाह** पाक से सिर्फ़ “औलाद” का नहीं आफ़िय्यत वाली औलाद का सुवाल करना चाहिये वरना कहीं ऐसा न हो कि औलाद तो हो मगर सख़्त बीमार हो या मा'ज़ूर हो या ओपरेशन से आए या आते ही अपनी अम्मी की मौत का सबब बने जैसा कि बिल खुसूस पहली ज़चगी में कई माएं फ़ौत हो जाती हैं वगैरा । कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा बड़ा हो कर बे नमाज़ी बन जाता है, मां बाप को सताता है, बुरी सोहबत की वजह से मुनशिशय्यात का आदी हो

जाता है या चोर, डाकू बन कर मुआशरे में उभरता है, या बद अक़ीदा लोगों की सोहबत के बाइस बद मज़हब हो जाता है, हत्ता कि कभी कभी **مَعَادِ اللَّهِ** गुस्ताख़े रसूल बन कर या सरीह कुफ़्रिय्यात बक कर या इस्लाम से मुन्हरिफ़ (या'नी बागी) हो कर मुरतद हो जाता है। बहर हाल किसी का दुन्या में “आना” दुन्या व आख़िरत के बहुत बहुत और बहुत ही सारे इम्तिहानात में मुब्तला होना है। इस जिम्न में दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 692 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 5 ता 6 पर दिया हुआ मज़्मून निहायत इब्रत खेज़ है, मअ तसर्फ़ु अर्ज़ है : हदीसे मुबारक में कस्ते उम्मत की तरगीब दिलाई गई है और हमारे प्यारे प्यारे आका मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ब रोज़े क़ियामत इस उम्मत के कसीर होने पर खुश होंगे और दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करेंगे लिहाज़ा औलाद के हुसूल की ख़्वाहिश में दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी चाहिए। आज दुन्या में जो बे औलाद दिल जलाता और बच्चा पाने के लिये ख़ूब जतन करता है, वोह अच्छी तरह गौर कर ले कि अगर इस का मत्महे नज़र (या'नी मक्सदे अस्ली) औलाद से फ़क़त घर की जीनत और दुन्या की राहत है, हुसूले औलाद से मक्सूद आख़िरत की मन्फ़अत की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता तौर पर (या'नी अन्जान पन में) गोया “किसी” के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिहान में मुब्तला होने की आरजू कर रहा है ! मेरी येह बात शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो खुद “बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़” में मुब्तला हो। एक ख़ाइफ़ (या'नी ख़ौफ़े खुदा रखने वाले) बुजुर्ग हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ **رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ** के फ़रमान का

खुलासा है : मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता जो कि कियामत की हौलनाकियों का मुशाहदा करे (या'नी देखे) गा, मुझे सिर्फ उस पर रश्क आता है जो “कुछ भी” न हो। (या'नी पैदा ही न हो)

(حلیۃ الاولیاء، 8/93، رقم: 11470، طحطا)

मुसल्मानों के दूसरे खलीफ़ा हज़रते फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने ग़लबए ख़ौफ़ के वक़्त फ़रमाया : काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता ! (طبقات کبریٰ لابن سعد، 3/274) अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

أَمِينِ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रों हज़र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! कसते इस्यां हाए ख़ौफ़ दोज़ख़ का काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(वसाइले बख़्शाश, स. 256, 258)

एक अ़ालिम बाप का इब्रतनाक अन्जाम

मां बाप के हक़ में औलाद गो कभी ने'मत भी साबित होती है मगर कभी सहीह इस्लामी तरबियत पर वालिदैन के तवज्जोह न देने के बाइस बहुत बड़ी ज़हमत भी बन जाती है, इस बात को हिल्यतुल औलिया में वारिद शुदा इस वाकिअ़े से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे हज़रते मालिक बिन दीनार رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मन्कूल है कि बनी इस्राईल में एक अ़ालिम साहिब घर में इज्तिमाअ़ कर के उस में बयान फ़रमाया करते थे, एक दिन उन के जवान लड़के ने एक ख़ूब सूरत लड़की की तरफ़ आंख से इशारा किया, जो कि उन अ़ालिम साहिब ने देख लिया और कहा : “ऐ बेटे सब्र कर।” येह कहते ही अ़ालिम साहिब अपने मन्च से मुंह के बल

गिर पड़े यहाँ तक कि उन की हड्डियों के बा'ज जोड़ टूट गए, उन की बीवी का हम्ल साकित हो गया और उन के लड़के जंग में मारे गए। **अल्लाह** पाक ने उस वक्त के नबी **عَلَيْهِ السَّلَام** को वही फ़रमाई कि फुलां अ़ालिम को ख़बर कर दो कि मैं उस की नस्ल से कभी सिद्दीक़ पैदा नहीं करूंगा, क्या मेरे लिये सिर्फ़ इतना ही नाराज़ होना था कि वोह बेटे को कह दे : “ऐ बेटे सब्र कर।” (2823: 422/2, **حلیة الاولیاء**, 2) मतलब येह कि अपने बेटे पर सख़्ती क्यूं नहीं की और उसे उस बुरी हरकत से अच्छी तरह बाज़ क्यूं न रखा ? इस रिवायत में “सिद्दीक़” का ज़िक्र है, औलियाए किराम की सब से अफ़ज़ल किस्म सिद्दीक़ कहलाती है। **سَيِّدُ اللَّهِ عَلَيْهِ** हमारे गौसे आ'जम **عَلَيْهِ** सिद्दीक़ थे।

पेन्सिल की चोरी से फांसी के फन्दे तक

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलाद की ऐसी तरबियत करनी चाहिये कि वोह बचपन ही से अच्छाइयों से प्यार करें और बुराइयों से बेज़ार रहें, अगर ऐसा न किया गया तो हो सकता है कि बच्चा बिगड़ जाए और बड़ा हो कर कुछ का कुछ कर डाले जैसा कि कहा जाता है कि एक ख़तरनाक डाकू गरिफ़्तार कर लिया गया, मुक़द्दमा चला, उस पर डकेतियों और क़त्लो ग़ारत गरियों की मुख़्तलिफ़ वारिदातें साबित हो गईं जिन के सबब उसे फांसी की सज़ा सुनाई गई। जब फांसी का वक्त करीब आया तो उस से उस की आख़िरी आरजू पूछी गई, उस ने अपनी मां से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, चुनान्चे उस की मां को बुला लिया गया, जूँ ही उस ने अपनी मां को देखा, एक दम उस पर हम्ला कर दिया और नोचा नाची और मारा मारी शुरूअ कर दी, ड्यूटी पर मौजूद अ़मले ने जूँ तूँ ज़ख़्मी मां को बे रहूम बेटे के चुंगल से छुड़ाया। जब उस डाकू से इस सफ़ाकाना

हरकत का सबब पूछा गया तो बोला : मुझे फांसी के फन्दे तक इसी मां ने पहुंचाया है, दर अस्ल किस्सा यूं है कि मैं ने बचपन के ला शुऊरी के दौर में स्कूल के अन्दर एक तालिबे इल्म की पेन्सिल चुरा ली और घर ला कर अपनी इस मां को दिखाई, अब चाहिये तो येह था कि वोह मुझे इस ग़लत काम से नफ़त दिलाती मगर येह सिर्फ़ मुस्करा कर चुप हो रही, उस वक़्त मुझ में अक़ल ही कितनी थी ! मैं समझा कि मैं ने कोई बहुत ही अच्छा कारनामा अन्जाम दिया है ! लिहाज़ा मेरा हौसला बढ़ा और मैं मज़ीद पेन्सिलें और कौपियां चुराने लगा, जब बड़ा हुवा तो चोरी की आदत काफ़ी पक्की हो चुकी थी और दिल ख़ूब खुल गया था लिहाज़ा मैं ने डकेतियां शुरूअ कर दीं, इसी लूटमार के दौरान मुझ से बा'ज़ क़त्ल की वारिदातें भी सरज़द हो गईं और मैं बहुत “ख़तरनाक डाकू” बन गया आख़िर पोलीस के हाथों गरिफ़्तार हो कर आज अपनी इसी ना लाइक़ मां की ग़लत तरबियत की बदौलत चन्द ही लम्हों के बा'द अपने गले में फांसी का फन्दा पहनने वाला हूं।

आख़िरत की सज़ा के मुक़ाबले में दुन्या की सज़ा कुछ भी नहीं !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बचपन की ग़लत तरबियत कैसा रंग लाई ! हो सकता है कि कोई सोचे कि हम अपने बच्चे को चोर चकार थोड़े ही बना रहे हैं ! ठीक है सब मां बाप “मा'रूफ़ चोरी” या'नी बा काइदा दूसरों का माल चुराने की ता'लीम नहीं दिया करते लेकिन सिर्फ़ चोरी ही को तो बुराई नहीं कहते, और भी तो बहुत सारी बुराइयां हैं जो कई मां बाप आज कल अपनी औलाद को सिखाते हैं मसलन झूट बोल कर, धोका दे कर, कम नाप तोल कर माल बेचना वगैरा। क्या सूदी लेन

देन, नाकिस माल को उम्दा ज़ाहिर कर के बेचने का गुर सिखाना या बेटे को दाढ़ी बढ़ाने और बेटी को शर्ई पर्दा करने वगैरा से रोकना गुनाह नहीं ? क्या इस तरह करने वाले मुअ़ाशरे के “मुहज़ज़ब चोर और सफ़ेद पोश डाकू” नहीं कहलाए जा सकते ? येह दुन्या में मुअ़ज़ज़ नज़र आने वाले क्या आख़िरत में भी इज़ज़त मिलने की उम्मीदें बांधे हुए हैं ! खुदा की क़सम ! उस डाकू को होने वाली फ़ांसी की दुन्यवी तक्लीफ़ और उस मां को पहुंचने वाली लम्हे भर की ईज़ा के मुक़ाबले में औलाद को गुनाहों की तरबियत देने वालों को मिलने वाले अज़ाब का करोड़वां हिस्सा करोड़हा करोड़ गुना से भी शदीद व अशद और सख़्त तर होगा । الأمان والحفیظ

बाप को जलाने के लिये लक्ड़ियां ले आऊं

हमारे मौजूदा मुअ़ाशरे का एक अजीबो ग़रीब दिल ख़राश वाक़िआ सुनिये और हैरत से सर धुनिये कि वालिदैन की तरफ़ से सुन्नतों भरी तरबियत न मिलने की सूरत में औलाद कैसे कैसे अनोखे कारनामे अन्जाम देती है ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि 2001 ई. में हमारे यहां एक बहुत बड़े सेठ का इन्तिक़ाल हो गया । लोग उस के आलीशान बंगले में जम्अ थे कि मर्हूम का 19 सालाह बेटा जो कि एक मोडर्न स्कूल में पढ़ता था, कहीं जाने के लिये एक दम उज़्लत (या'नी जल्दी) में उठा, किसी ने उज़्लत (या'नी जल्दी) का सबब दरयाफ़्त किया तो कहने लगा : “मेरे वालिद साहिब मेरे साथ बहुत महबूबत करते थे, मैं ने सोचा कि आख़िरी वक़्त अपने हाथों से इन की कुछ ख़िदमत कर लूं, चुनान्चे इन की मय्यित को जलाने के लिये मैं खुद लक्ड़ियां ले कर आऊंगा ।” येह सुन कर लोगों की हैरत की इन्तिहा न रही कि इस का बाप तो मुसल्मान

था, फिर इस को जलाने के लिये लकड़ियां क्यूं लेने जा रहा है ! गौर किया तो अन्दाज़ा हुवा कि इस नादान ने गैर मुस्लिमों की फ़िल्मों में लाशें जलाने के मनाज़िर देख लिये होंगे तो इस के जेहन में ये बात बैठ गई होगी कि जो भी मर जाए उस को जलाना होता है इस फ़िल्में देखने के शौकीन को ये पता ही न होगा कि मुसलमानों को जलाया नहीं दफ़नाया जाता है । बहर हाल उस के मर्हूम वालिद की तदफ़ीन कर दी गई । जब फ़िल्मों के इस ख़ौफ़नाक मन्फ़ी असर (SIDE EFFECT) का ये वाकिआ उस अलाके के लोगों को मा'लूम हुवा तो उन्हें बड़ी इब्रत हुई, कई नौ जवानों ने जोश में आ कर "केबल" काट डाले कुछ असें तक येही सूते हाल रही मगर रफ़्ता रफ़्ता नफ़्सो शैतान ग़ालिब आए और केबल फिर से जोड़ लिये गए !

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर नफ़्सो शैतां सथियदा कब तक दबाते जाएंगे

(हदाइके बख़्शिश, स. 157)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के इस शे'र के मा'ना हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम कमज़ोर गुलामों की गुनाहों से हिफ़ाज़त फ़रमाइये, ऐ आका ! हम गुनाहों के मरज़ से आख़िर कब शिफ़ा पाएंगे ! आख़िर येह नफ़्सो शैतान हमें कब तक गुनाहों में फंसाए रहेंगे ! (नफ़्सो शैतान के शर से बचने का एक बेहतरीन तरीका येह है कि किसी पीरे कामिल का मुरीद हो जाए कि जब उस के जामेअ शराइत पीर पर नफ़्सो शैतान के वार नहीं चल पाएंगे तो उस की बरकत से उस के मुरीदीन की भी हिफ़ाज़त की सूरत बनी रहेगी । एक सराईकी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है)

पीर दे हथ विच हथ कूं डे कर नफ़्स दी बांहा मरोड़ तां तूं हिक थीवें

(या'नी अपना हाथ किसी पीरे कामिल के हाथों में दे कर नफ़्स का बाजू मरोड़ दे ताकि तुझे मक़ामे फ़नाइय्यत हासिल हो)

ईसाले सवाब का इन्तिज़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस अनोखे वाकिए में इब्रत ही इब्रत है। अगर्चे आप आज जिन्दा हैं मगर कल यकीनन मरना पड़ेगा, अगर आप ने अपने बेटे को सिर्फ़ और सिर्फ़ दुनिया पढ़ाई, दौलत कमाने ही सिखाई, ख़ूब मूसीकी सुनाई, एक से एक फ़िल्म दिखाई, दीनी ता'लीम न दिलाई न सिखाई, मस्जिद की राह न दिखलाई, उस के दिल में महब्बते रसूल की शम्अ न जलाई, मक्की मदनी आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत की निशानी प्यारी प्यारी मुबारक दाढ़ी उस के चेहरे पर न सजवाई बल्कि ठीक ठाक फ़ैशन करवाया तो याद रखिये ! न वोह आप का जनाज़ा पढ़ सकेगा और न ही उसे आप के लिये ईसाले सवाब करना आएगा ! हालां कि मरने के बा'द ईसाले सवाब की आप को बहुत ज़ियादा हाजत होगी। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि मुश्कबार है : मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुनिया व मा फ़ीहा (या'नी दुनिया और जो कुछ उस में है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** पाक क़ब्र वालों को उन के जिन्दा मुतअल्लिकीन की तरफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अता फ़रमाता है, जिन्दों का हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) मुर्दों के लिये “दुआए मग़िफ़रत करना” है।

(شعب الایمان، 6، 203، حدیث: 7905)

हर भले की भलाई का सदका इस बुरे को भी कर भला या रब

(ज़ौके ना'त, स. 60)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अगले हफ़्ते का रिसाला

